Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SA–301

B.A. (Part–III) Suppl. Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)।

1. (i) 'शम्बूक' खंडकाव्य का प्रतिपाद्य क्या है ?

   (ii) 'ले चल मुझे भुलावा देकर' पंक्ति में कवि के पलायनवादी दृष्टि पर विचार लिखिए।

   (iii) 'नौका विहार' कविता के सौन्दर्य का चित्रण कीजिए।

(iv) 'अकाल और उसके बाद' कविता का मूल संदेश क्या है ?

(v) 'असाध्य वीणा' में क्या दार्शनिकता है ?

(vi) दुष्यंत कुमार की काव्य चेतना स्पष्ट कीजिए।

(vii) स्त्री विमर्श का क्या अभिप्राय है ?

(viii) मनोविश्लेषणवाद को समझाइए।

(ix) प्रयोगवाद की उपमान योजना पर टिप्पणी लिखिए।

(x) साधारणीकरण पर विचार लिखिए।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)।

2. वर्ण से होगा नहीं अब त्राण
कर्म से ही मनुज का कल्याण
जन्म से निश्चित न होगा वर्ण
वर्ण तक सीमित न होगा स्वर्ण
कर्म से ही श्रेष्ठता अधिकार
कर्म सबके लिए सम आधार।

3. ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक! धीरे-धीरे!
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी-
निश्छल प्रेम कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

4. हारूं तो खोऊं अपनापन
पाऊं प्रियतम में निर्वासन,
जीत बनूँ तेरा ही बंधन

भर लाऊँ सीपी में सागर,

प्रिय! मेरी अब हार विजय क्या ?

चित्रित तू मैं हूँ रेखाक्रम,

मधुर राग तू मैं स्वर संगम,

तू असीम मैं सीमा का भ्रम,

काया छाया में रहस्यमय!

प्रेयसि-प्रियतम का अभिनय क्या ?

5. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद

धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद।

6. श्रेय नहीं कुछ मेरा :

मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में—

वीणा के माध्यम से अपने को मैंने

सब कुछ को सौंप दिया था—

सुना आपने जो वह मेरा नहीं,

न वीणा का था :

वह तो सब कुछ की तथता थी—

महाशून्य

वह महामौन

अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय

जो शब्दहीन

सब में गाता है।

7. पढ़िए गीता

बनिए सीता

फिर इन सबमें लगा पलीता

किसी मूर्ख की हो परिणीता

निज घरबार बसाइये।

होंय कँटीली

आँखें गीली

लकड़ी सीली, तबीयत ढीली

घर की सबसे बड़ी पतीली

भरकर भात पसाइये।

8. वो आदमी नहीं है मुकम्मल बयान है,

माथे वे उसके चोट का गहरा निशान है।

वे कर रहे हैं इश्क पे संजीदा गुफ्तगू,

मैं क्या बताऊँ मेरा वहीं और ध्यान है।

सामान कुछ नहीं है फटेहाल है मगर

झोले में उसके पास कोई संविधान है।

खण्ड–स प्रत्येक 20

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. ''महादेवी वर्मा के काव्य विरह और वेदना है।'' कथन को स्पष्ट कीजिए।

10. ''मुक्तिबोध सच्चे अर्थों में जनकवि हैं।'' स्पष्ट कीजिए।

11. हरीश भदानी के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

12. प्रतीक का क्या अभिप्राय है ? प्रतीकों की उपयोगिता और महत्ता को स्पष्ट कीजिए।